REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2023

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन

श्री. प्रेम प्रकाश कुजूर
शासकीय महाविद्यालय, राजपुर, जिला बलरामपुर -रा. गंज (छ. ग.)

सारांश:

यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति का पता लगाता है। अध्ययन का उद्देश्य इन उद्योगों के आर्थिक योगदान का आकलन करना, उपयोग किए जाने वाले प्रमुख लघु वनोपज की पहचान करना और इन उद्यमों के सामने आने वाली चुनौतियों का मूल्यांकन करना है। मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, शोध में सर्वेक्षणों से मात्रात्मक आंकड़ों और उद्यमियों, श्रमिकों और सरकारी अधिकारियों सहित स्थानीय हितधारकों के साथ साक्षात्कार से गुणात्मक अंतर्दृष्टि शामिल है। निष्कर्ष बताते हैं कि लघु वनोपज-आधारित उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के लिए, रोजगार प्रदान करके और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करके। हालांकि, सीमित बाजार पहुंच, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, जटिल नियम और स्थिरता के मुद्दे जैसी चुनौतियां उनके विकास में बाधा डालती हैं। अध्ययन मूल्य संवर्धन, प्रशिक्षण, बाजार संपर्क और सहायक सरकारी नीतियों के माध्यम से विकास की क्षमता पर प्रकाश डालता है। ये जानकारियाँ सतत विकास को बढ़ावा देने और क्षेत्र में लघु वनोपज-आधारित लघु और कुटीर उद्योगों की आर्थिक व्यवहार्यता को बढ़ाने के लिए रणनीतियों को सूचित कर सकती हैं।

मुख्य शब्द: *लघु वनोपज, लघु और कुटीर उद्योग, जशपुर जिला, आदिवासी समुदाय, आर्थिक योगदान*

परिचय:

भारत के छत्तीसगढ़ में जशपुर जिला अपनी समृद्ध जैव विविधता और महत्वपूर्ण वन आवरण के लिए जाना जाता है। यह जिला विविध आदिवासी समुदायों का घर है, जो परंपरागत रूप से अपनी आजीविका के लिए जंगल पर निर्भर रहे हैं। तेंदू के पत्ते, साल के बीज, महुआ के फूल और शहद जैसे गैर-लकड़ी वन उत्पादों सहित लघु वनोपज, स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लघु वनोपज पर आधारित लघु और कुटीर उद्योग जशपुर में महत्वपूर्ण हैं, जो रोजगार प्रदान करते हैं और पारंपरिक जीवन शैली को बनाए रखते हैं। इन उद्योगों में विभिन्न वन उत्पादों का संग्रह, प्रसंस्करण और विपणन शामिल है, जो पारंपरिक ज्ञान और टिकाऊ वन प्रबंधन प्रथाओं के संरक्षण में योगदान करते हैं।

हालांकि, लघु वनोपज आधारित उद्योगों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें बड़े बाजारों तक सीमित पहुंच, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, जटिल नियामक ढांचे और स्थिरता के मुद्दे शामिल हैं। आधुनिकीकरण और बदलते आर्थिक गतिशीलता का प्रभाव भी इन पारंपरिक उद्योगों के लिए खतरा बन गया है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु और कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति का व्यापक विश्लेषण प्रदान करना है, जिसमें उनके आर्थिक योगदान, उपयोग किए जाने वाले प्रमुख लघु वनोपज और सामने आने वाली चुनौतियों की जांच की जाएगी। निष्कर्ष नीति निर्माताओं, विकास एजेंसियों और स्थानीय उद्यमियों के लिए मूल्यवान होंगे, जो जशपुर में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और आजीविका में सुधार के लिए लघु वनोपज की पूरी क्षमता का दोहन करने के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे।

शोध के उद्देश्य:

१) जशपुर में लघु वनोपज पर आधारित लघु और कुटीर उद्योगों के आर्थिक योगदान का आकलन करना।

२) इन उद्योगों में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख लघु वनोपज की पहचान करना।

३) इन उद्योगों के सामने आने वाली चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

४) क्षेत्र में विकास और वृद्धि की संभावनाओं का पता लगाना।

साहित्य समीक्षा:

लघु वनोपज ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में विशेष रूप से जशपुर जिले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन लघु और कुटीर उद्योगों में सतत विकास की क्षमता है, लेकिन अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, बाजार पहुंच बाधाओं और नियामक बाधाओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। **भट्टाचार्य (२०१२)** ने पाया कि लघु वनोपज रोजगार के अवसर और पूरक आय प्रदान करके ग्रामीण आबादी का महत्वपूर्ण उत्थान कर सकते हैं। **चौधरी और प्रकाश (२०१५)** ने अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, बाजार पहुंच बाधाओं और नियामक बाधाओं जैसे प्रमुख मुद्दों की पहचान की जो लघु वनोपज आधारित लघु और कुटीर उद्योगों के विकास और विकास को सीमित करते हैं। **मिश्रा (२०१८)** ने लघु वनोपज आधारित उद्यमों के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पर प्रकाश डाला, उनके महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रभाव को देखते हुए, महत्वपूर्ण रोजगार के अवसर प्रदान किए **रॉय (२०१९)** ने लघु वनोपज क्षेत्र में बाजार संपर्क और मूल्य संवर्धन पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें लघु वनोपज के आर्थिक लाभों को बढ़ाने के लिए मजबूत बाजार संपर्क स्थापित करने और लघु वनोपज आधारित लघु और कुटीर उद्योगों की लाभप्रदता और स्थिरता बढ़ाने के लिए मूल्य संवर्धन की क्षमता पर जोर दिया गया। जशपुर में लघु वनोपज आधारित उद्योगों के सतत विकास के लिए नीतिगत सुधारों, बाजार विकास और सतत प्रथाओं के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है।

शोध पद्धति:

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु और कुटीर उद्योगों की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए मिश्रित-पद्धति अनुसंधान डिजाइन का उपयोग करता है। सर्वेक्षण, साक्षात्कार और फ़ोकस समूहों के माध्यम से डेटा एकत्र किया जाता है। अध्ययन में लघु वनोपज-आधारित उद्योगों की चुनौतियों, अवसरों और सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की पहचान करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, अनुमानात्मक सांख्यिकी और विषयगत विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों में सरकारी पहलों एवं सहकारी प्रयासों के कारण उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। ये उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से आदिवासी एवं ग्रामीण समुदायों के लिए जो अपनी आजीविका के लिए वन संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ (लघु वनोपज आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने, न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी योजनाओं के माध्यम से संग्रहकर्ताओं के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने में एक प्रमुख खिलाड़ी है। राज्य सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के तहत ६५ प्रकार के लघु वनोपज को शामिल किया है, जिससे संग्रहकर्ताओं और प्रसंस्करणकर्ताओं की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

छत्तीसगढ़ में लघु वनोपज के संग्रह और प्रसंस्करण से १.३५ मिलियन से अधिक सहकारी सदस्य लाभान्वित होते हैं, उच्च समर्थन मूल्य और विस्तारित खरीद के कारण संग्रहकर्ता अतिरिक्त आय अर्जित करते हैं। इमली और महुआ-आधारित सैनिटाइज़र जैसे उत्पादों ने नवाचार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं, जो राज्य में सफल मूल्यवर्धन प्रयासों को उजागर करते हैं।

ग्रामीण रोज़गार और आत्मनिर्भरता बढ़ाने की राज्य की रणनीति में महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) महत्वपूर्ण हैं, ४,७८५ महिला स्वयं सहायता समूह सक्रिय रूप से इन गतिविधियों में लगे हुए हैं, जिससे सालाना १३ लाख से अधिक लोग लाभान्वित होते हैं। छत्तीसगढ़ ने लघु वनोपज के प्राथमिक प्रसंस्करण के लिए १३९ वन धन विकास केंद्र स्थापित किए हैं, जिससे कच्चे वनोपज में मूल्यवर्धन के लिए एक संरचित दृष्टिकोण तैयार हुआ है।

नई ग्रामीण और कुटीर उद्योग नीति २०२२ जैसी नीतियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में लघु और कुटीर उद्योगों की स्थापना और विकास का समर्थन करती हैं, जो वन-आधारित उद्योगों में निवेश के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। लघु वन उपज प्रसंस्करण सहित विभिन्न ग्रामीण गतिविधियों के लिए गौठानों को औद्योगिक केंद्रों के रूप में विकसित करना छत्तीसगढ़ के व्यापक ग्रामीण-केंद्रित विकास मॉडल का हिस्सा है।

जशपुर जिले में लघु वन उपज पर आधारित लघु और कुटीर उद्योग आबादी के एक बड़े हिस्से को रोजगार और आय के अवसर प्रदान करके स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन उद्योगों में स्थानीय रोजगार, मौसमी काम और तेंदू के पत्ते, साल के बीज, महुआ के फूल और शहद जैसे प्रमुख उत्पाद शामिल हैं।

तेंदू के पत्ते बीड़ी बनाने में इस्तेमाल होने वाला एक महत्वपूर्ण लघु वन उत्पाद है और राज्य सरकार ने संग्राहकों की आय बढ़ाने के लिए इन पत्तों की खरीद मूल्य में वृद्धि की है। साल के बीजों को साबुन और सौंदर्य प्रसाधन निर्माण सहित विभिन्न औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए तेल निकालने के लिए संसाधित किया जाता है। महुआ के फूलों का उपयोग पारंपरिक शराब और खाद्य उत्पादों के उत्पादन में किया जाता है, जो अतिरिक्त रोजगार और मूल्यवर्धित उत्पाद प्रदान करते हैं।

वन शहद संग्रह और प्रसंस्करण भी "छत्तीसगढ़ हर्बल्स" ब्रांड के तहत विपणन किए गए मूल्यवर्धित उत्पादों के माध्यम से आजीविका को बढ़ाता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना ने संग्राहकों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे कई परिवारों की वार्षिक आय में वृद्धि हुई है। छत्तीसगढ़ हर्बल्स जैसे उत्पादों की ब्रांडिंग और विपणन ने राष्ट्रीय बाजार खोले हैं, जिससे अमेजोन जैसे ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से बेहतर राजस्व धाराएँ उपलब्ध हुई हैं। नई ग्रामीण और कुटीर उद्योग नीति २०२२ जैसी सरकारी योजनाएँ, पूंजी निवेश और कर छूट पर सब्सिडी सहित लघु और कुटीर उद्योगों की स्थापना और विकास के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती हैं।

वन धन विकास केंद्र लघु वनोपज के प्राथमिक प्रसंस्करण की सुविधा प्रदान करते हैं, उत्पादों के बाजार में पहुँचने से पहले मूल्यवर्धन करते हैं और स्थानीय रोजगार के अवसर पैदा करते हैं। जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु और कुटीर उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं, जो ग्रामीण और आदिवासी समुदायों की आजीविका को बनाए रखने और बेहतर बनाने के लिए रोजगार, उचित मूल्य और मूल्यवर्धन प्रदान करते हैं। विभिन्न नीतियों और योजनाओं के माध्यम से सरकार से मिलने वाला निरंतर समर्थन उनके आर्थिक प्रभाव को और मजबूत करता है और सतत विकास सुनिश्चित करता है।

जशपुर जिले में उपयोग की जाने वाली प्रमुख लघु वन उपज:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में, लघु और कुटीर उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था और आदिवासी और ग्रामीण समुदायों की आजीविका का समर्थन करने के लिए कई प्रमुख लघु वन उपज का उपयोग कर रहे हैं। बीड़ी उद्योग में बीड़ी बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले तेंदू के पत्ते आदिवासी समुदायों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करते हैं, साथ ही खरीद मूल्य में वृद्धि से आय में वृद्धि होती है। यह क्षेत्र मौसमी रोजगार भी प्रदान करता है, जिससे पूरे वर्ष उनकी आजीविका चलती है। तेल निकालने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले साल के बीजों का उपयोग खाद्य और कॉस्मेटिक दोनों उद्योगों में किया जाता है, स्थानीय लघु और कुटीर उद्योग उत्पादों को बेचने से पहले मूल्यवर्धन के लिए उनका प्रसंस्करण करते हैं।

पारंपरिक शराब और खाद्य पदार्थों के उत्पादन में इस्तेमाल किए जाने वाले मोहा फूल भी स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो इन फूलों के संग्रह और प्रसंस्करण में शामिल परिवारों को आय प्रदान करते हैं। महुआ के फूलों को शराब और अन्य उत्पादों में संसाधित करने से स्थानीय लघु उद्योगों को सहायता मिलती है और आदिवासी अनुष्ठानों और समारोहों में इसका सांस्कृतिक महत्व है। वन मधुमक्खियों से एकत्र किए गए शहद को संसाधित किया जाता है और शहरी बाजारों में बेचा जाता है, प्राकृतिक और जैविक शहद की बढ़ती मांग स्थानीय मधुमक्खी पालकों के लिए आकर्षक अवसर प्रदान करती है। उत्पादों का विपणन "छत्तीसगढ़ हर्बल्स" जैसे ब्रांडों के तहत किया जाता है, जिन्हें अमेज़न जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर बेचा जाता है, जिससे राष्ट्रीय बाज़ारों तक उनकी पहुँच बढ़ जाती है।

जशपुर जिले में इन प्रमुख लघु वनोपजों का उपयोग छोटे और कुटीर उद्योगों की आर्थिक संरचना को मजबूत करता है, जो आदिवासी और ग्रामीण समुदायों को आवश्यक आय प्रदान करते हुए क्षेत्र के समग्र आर्थिक विकास में योगदान देता है। नीतियों और प्रोत्साहनों के माध्यम से सरकारी समर्थन इन उद्योगों की क्षमता को और बढ़ाता है, जिससे वे छत्तीसगढ़ में सतत ग्रामीण विकास की आधारशिला बन जाते हैं।

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों के सामने चुनौतियाँ:

जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों की वृद्धि की संभावनाएँ बहुत अधिक हैं। हालाँकि, इन उद्योगों को सीमित बाज़ार पहुँच, ब्रांड पहचान की कमी, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, खराब सड़क संपर्क, जटिल नियम और संधारणीय प्रथाओं की कमी सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, बेहतर बुनियादी ढाँचा, बेहतर बाज़ार पहुँच, सरलीकृत नियम और संधारणीय संसाधन प्रबंधन प्रथाओं को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इन मुद्दों से निपटने के द्वारा, इन उद्योगों की क्षमता को पूरी तरह से महसूस किया जा सकता है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था और संधारणीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

मूल्य संवर्धन कच्चे माल को उच्च मूल्य वाले उत्पादों जैसे कि साल के बीजों से आवश्यक तेल, हर्बल दवाइयाँ, सौंदर्य प्रसाधन और महुआ के फूलों और शहद से खाद्य पदार्थों में संसाधित करके लघु वनोपज-आधारित उत्पादों की लाभप्रदता बढ़ा सकता है। उत्पाद विविधीकरण नए बाज़ार क्षेत्रों को खोल सकता है और राजस्व धाराओं को बढ़ा सकता है, जैसे कि उपयोग के लिए तैयार खाद्य पदार्थ, जैविक शहद और कॉस्मेटिक उत्पादों का उत्पादन करना। प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पहल भी संग्राहकों को स्थायी कटाई प्रथाओं और पर्यावरण के अनुकूल तरीकों का उपयोग करके लघु वन उपज की दीर्घकालिक उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है।

सहकारिताओं, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, ब्रांड विकास और सरकारी सहायता के माध्यम से बाज़ार संबंधों को मज़बूत किया जा सकता है। सहकारी समितियों की भूमिका को मज़बूत करने से छोटे उत्पादकों से उत्पादों को एकत्र करने में मदद मिल सकती है, जिससे बेहतर सौदेबाज़ी की शक्ति और बड़े बाज़ारों तक पहुँच सुनिश्चित हो सकती है। मार्केटिंग और बिक्री के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का लाभ उठाने से बाज़ार तक पहुँच में काफ़ी सुधार हो सकता है, व्यापक दर्शकों तक पहुँच और बिक्री में वृद्धि हो सकती है। "छत्तीसगढ़ हर्बल्स" जैसे मज़बूत स्थानीय ब्रांड बनाने और बढ़ावा देने से उत्पाद पहचान और उपभोक्ता विश्वास बढ़ सकता है, जिससे लघु वन उपज-आधारित उत्पादों की माँग और उच्च कीमतें बढ़ सकती हैं।

सरकारी सहायता नीति सुधारों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है जो विनियामक प्रक्रियाओं को सरल बनाते हैं और लघु वन उपज-आधारित उद्योगों के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं। लघु वन उपज प्रसंस्करण इकाइयों के लिए लक्षित प्रोत्साहन और सब्सिडी की पेशकश इस क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित कर सकती है, जबकि बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए वित्तीय सहायता उत्पादकता और दक्षता को बढ़ा सकती है। लघु वन उपज के लिए नए उपयोगों की खोज करने और प्रसंस्करण तकनीकों में सुधार करने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश करने से नवोन्मेषी उत्पाद और प्रक्रियाएँ बन सकती हैं, जिससे इस क्षेत्र की विकास क्षमता में और वृद्धि हो सकती है।

जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास की काफी संभावनाएं हैं। मूल्य संवर्धन को बढ़ाकर, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण प्रदान करके, बाजार संबंधों को मजबूत करके और सरकारी सहायता को बढ़ावा देकर, ये उद्योग अपने आर्थिक प्रभाव को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा और आदिवासी एवं ग्रामीण समुदायों के लिए सतत विकास और बेहतर आजीविका सुनिश्चित होगी।

निष्कर्ष:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों के अध्ययन से एक गतिशील क्षेत्र का पता चलता है जो स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये उद्योग ग्रामीण और आदिवासी समुदायों को रोजगार और आय के अवसर प्रदान करते हैं, उनकी आजीविका को बढ़ाते हैं और सतत विकास में योगदान देते हैं। तेंदू के पत्ते, साल के बीज, महुआ के फूल और शहद जैसे प्रमुख उत्पाद प्रमुख आय स्रोत के रूप में काम करते हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी सरकारी योजनाओं ने इन उद्योगों की वित्तीय स्थिरता में सुधार किया है। हालाँकि, इन उद्योगों को सीमित बाज़ार पहुँच, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, जटिल नियम और स्थिरता सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए नियमों को सुव्यवस्थित करना और लक्षित प्रोत्साहन देना आवश्यक कदम हैं।

इस क्षेत्र की दीर्घायु के लिए टिकाऊ कटाई और प्रसंस्करण प्रथाओं को बढ़ावा देना आवश्यक है। मूल्य संवर्धन, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, सहकारी समितियों और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से बाज़ार संबंधों को मजबूत करने और सरकारी समर्थन के साथ इस क्षेत्र में विकास की संभावनाएँ पर्याप्त हैं। रणनीतिक समर्थन और विकास के साथ, इन उद्योगों में क्षेत्र के सतत विकास में योगदान करते हुए महत्वपूर्ण रूप से बढ़ने की क्षमता है। इस क्षेत्र को बढ़ाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता, सामुदायिक प्रयासों और नवीन प्रथाओं के साथ मिलकर, जशपुर जिले में इन लघु वनोपज-आधारित उद्योगों की दीर्घकालिक सफलता और समृद्धि सुनिश्चित कर सकती है।

संदर्भ:

- *Agrawal, A. (2010). Sustainable management of non-timber forest products.*
- *Bhattacharya, P. (2012). Economic potential of minor forest produce in India.*
- *Choudhary, M., & Prakash, S. (2015). Challenges in the Minor Forest Produce sector in Chhattisgarh.*
- *Government of India. (2021). "National Policy on Minor Forest Produce." Ministry of Tribal Affairs.*
- *Verma, P., & Kumar, R. (2019). "Market Dynamics of Minor Forest Produce in Central India." Forest Economics Review.*
- *Singh, A., & Banerjee, P. (2019). Marketing of Non-Timber Forest Produce (NTFP) in Jashpur District of Chhattisgarh: A Case Study. International Journal of Commerce and Management Research, 5(1), 59-67.*
- *Das, S., & Parida, B. (2018). Value Addition in Minor Forest Produce Marketing: A Study of Jashpur District, Chhattisgarh. Indian Journal of Commerce & Management Studies, 9(4), 52-58.*
- *Mishra, R. (2018). The role of small and cottage industries in rural development.*
- *https://csidc.in/non_core_sector/food-processing-and-minor-forest-produce/*
- *https://www.indiatoday.in/india/story/chhattisgarh-gets-10-national-awards-for-procurement-processing-and-marketing-of-forest-produce-1838806-2021-08-09*
- *https://mpsfri.org/files/TB_26.pdf*
- *https://fsi.nic.in/inventory_report/chhattisgarh/Forest%20Resources%20of%20Rajnandgaon%20and%20Durg%20Districts%20Chhatisg3.pdf*
- *Arjjumend, Hasrat. (2005). Non-Timber Forest Products And Tribal Livelihoods In North Chhattisgarh.*
- *https://forest.cg.gov.in/posts/bamboo-mission*
- *https://dcmsme.gov.in/old/dips/Jashpur.pdf*
- *https://cgstate.gov.in/html/documents/policies/SIPB/ip.PDF*
- *Shankar, D., Banjare, C., & Sahu, M. (2018). Tuber Crops Based Integrated Farming System Studies in Bastar and Kondagaon Districts of Chhattisgarh. International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences, 7(09), 1650–1658. https://doi.org/10.20546/ijcmas.2018.709.199*
- *Economy | District Jashpur, Government of Chhattisgarh | India. (n.d.). https://jashpur.nic.in/en/economy/*
- *Minor Forest Produce Product Park in Deobhog. (n.d.). Drishti IAS. https://www.drishtiias.com/state-pcs-current-affairs/minor-forest-produce-product-park-in-deobhog*